11-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - बाबा आये हैं, आप बच्चों को अपने समान महिमा लायक बनाने, बाप की जो महिमा है वह अभी तुम धारण करते हो"

प्रश्नः- भक्तिमार्ग में परमात्मा माशूक को पूरा न जानते भी कौन से शब्द बहुत प्यार से बोलते और याद करते हैं?

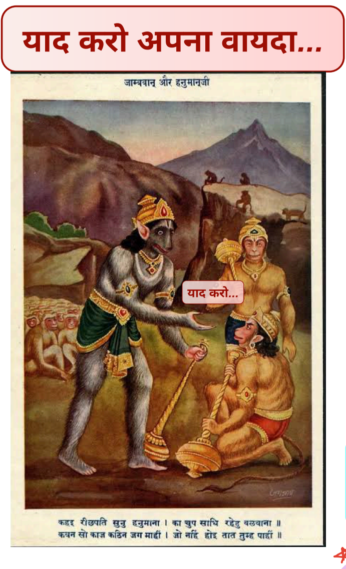

उत्तर:- बहुत प्यार से कहते और याद करते हैं हे माशूक तुम जब आयेंगे तो हम सिर्फ आपको ही याद करेंगे और सबसे बुद्धियोग तोड़ आपके साथ जोड़ेंगे। अब बाप कहते हैं बच्चे, मैं आया हुआ हूँ तो देही-अभिमानी बनो। तुम्हारा पहला फ़र्ज है - प्यार से बाप को याद करना।

m.Imp.

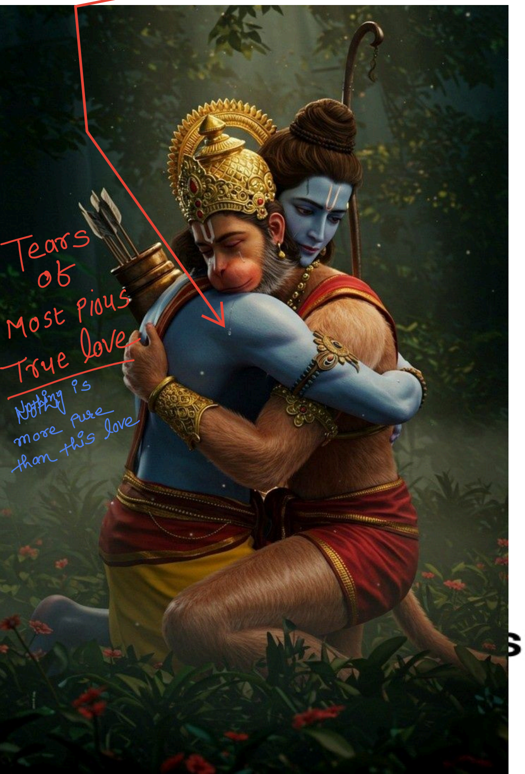

इस जगह आ गयी चाहतें अब मेरी
छीन लूँगा तुम्हे सारी दुनिया से ही (Invincible Determination)

तेरे इश्क पे हाँ हक़ मेरा ही तो है
कह दिया है ये मैंने मेरे रब(ड्रामा) से भी

जिस रास्ते तू ना मिले (श्रीमत के अलावा कुछ भी)
उस पे ना हो मेरे कदम (चाहे वह कितना ही भौतिक/दुनियावी प्राप्तियों से भरपूर क्यों ना हो)

(जिस रास्ते तू मुझे मिले, उस रास्ते पर चाहे अपार/अनगिनत कठिनाइयां क्यों ना हो या फिर उस रास्ते पर चलते, चाहे जान भी क्यों न चली जाए
किन्तु वही रास्ते पर होंगे मेरे कदम...)

तेरे बिन अब ना लेंगे एक भी दम(श्वास)
तुझे कितना चाहने लगे हम

तेरे साथ हो जायेंगे ख़तम
तुझे कितना चाहने लगे हम

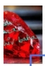

25/03/2025

बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? (1) ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? (2) शिवबाबा। और फिर (3) रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

शिवबाबा ने कहा है की मुझसे ऊपर ड्रामा है।

तो इसका एक मतलब ये हुआ की शिवबाबा मेरे लिए साजन/सजनी/माता/पिता/बच्चा/ दोस्त ... in short सबकुछ है और ड्रामा हुआ मेरे लिए रब/खुदा।

s: ज्ञान योग Click

याद

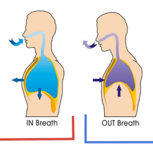

सेवा

.imp.

शिवबाबा से सकाश लो

श्रृष्टि को सकाश दो

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे जीव की आत्माओं को, परमपिता परमात्मा (जिसने अब शरीर का लोन लिया है) बैठ समझाते हैं कि मैं साधारण बूढ़े तन में आता हूँ। आकर बहुत बच्चों को पढ़ाता हूँ। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बच्चों को ही समझायेंगे। जरूर मुख द्वारा ही समझायेंगे और किसको समझायेंगे। कहते हैं - बच्चे, तुम मुझे भक्ति मार्ग में बुलाते आये हो - हे पतित-पावन, भारत खास और दुनिया में आम सब बुलाते हैं। भारत ही पावन था, बाकी सब शान्तिधाम में थे। बच्चों को यह स्मृति में रखना चाहिए कि "सतयुग-त्रेता किसको कहा जाता है, द्वापर-कलियुग किसको कहा जाता है। उनमें कौन-कौन राज्य करते थे," तुम्हारी बुद्धि में पूरी नॉलेज है। जैसे बाप को रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी है। बाप जो ज्ञान देते हैं वह बच्चों में भी जरूर होना चाहिए। बाप आकर बच्चों को आप समान बनाते हैं। जितनी बाप की महिमा है उतनी बच्चों की है। बाप ने बच्चों को जास्ती महिमावान बनाया है। हमेशा समझो कि शिवबाबा

याद करो अपना वायदा...

जरा सोचो तो सही...

How lucky and Great we are...!

इसको साधारण बात नही समझो

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये तो पक्का कर लो..

इन द्वारा सिखाते हैं। आत्मा ही एक-दो से बात करती है। परन्तु मनुष्य देह-अभिमानी होने के कारण समझते हैं, फलाना पढ़ाता है। वास्तव में करती सब कुछ आत्मा है। आत्मा ही पार्ट बजाती है। देही-अभिमानी बनना है। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझना है। जब तक अपने को आत्मा नहीं समझेंगे तो बाप को भी याद नहीं कर सकेंगे। भूल जाते हैं। तुमसे पूछा जाता है - तुम किसके बच्चे हो? तो कहते हो हम शिवबाबा के बच्चे हैं। विजीटर बुक में भी लिखा हुआ है - तुम्हारा बाप कौन है? तो झट देह के बाप का नाम बतायेंगे। अच्छा - अब देही के बाप का नाम बताओ। तो कोई श्रीकृष्ण का, कोई हनूमान का नाम लिखेंगे या तो लिखेंगे - हम नहीं जानते। अरे, तुम लौकिक बाप को जानते हो और पारलौकिक बाप जिनको तुम हमेशा दु:ख में याद करते हो, उनको नहीं जानते हो! कहते भी हैं, हे भगवान रहम करो। हे भगवान एक बच्चा दो। माँगते हो ना। अब बाप बिल्कुल सहज बात बताते हैं। तुम देह-अभिमान में बहुत रहते हो इसलिए बाप के वर्से का नशा नहीं

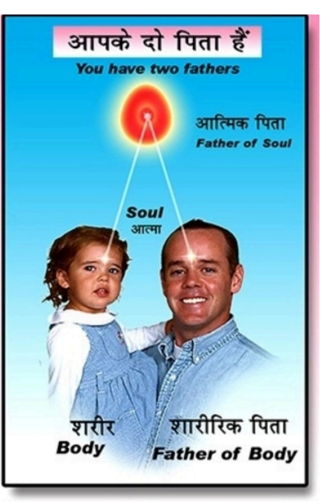

Here is the Fault

वो ही भगवान तुम्हें मिला है...

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

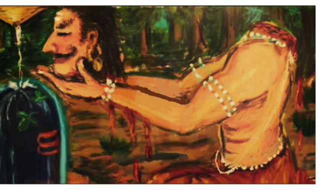

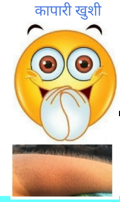

चढ़ता है। तुमको तो बहुत नशा चढ़ना चाहिए। भक्ति करते ही हैं - भगवान से मिलने के लिए। यज्ञ, तप, दान-पुण्य आदि करना यह सब भक्ति है। सब एक भगवान को याद करते हैं। बाप कहते हैं - मैं तुम्हारा पतियों का पति हूँ, बापों का बाप हूँ। सब बाप भगवान को याद जरूर करते हैं। आत्मायें ही याद करती हैं। भल कहते भी हैं, भृकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा... परन्तु यह बिगर समझ के ऐसे ही कह देते हैं। रहस्य का कुछ भी पता नहीं। तुम आत्मा को ही नहीं जानते हो तो आत्मा के बाप को कैसे जान सकेंगे। दीदार तो होता है भक्ति मार्ग वाला। भक्ति मार्ग में पूजा के लिए बड़ा-बड़ा लिंग रख देते हैं क्योंकि अगर बिन्दी का रूप दिखायें तो कोई समझ न सके। यह है महीन बात। परमात्मा जिसको अखण्ड ज्योति स्वरूप कहते हैं, मनुष्य कहते हैं उनका कोई बहुत बड़ा रूप है। ब्रह्म समाजी मठ वाले ज्योति को परमात्मा कहते हैं। दुनिया में यह किसको पता नहीं है कि परमपिता परमात्मा बिन्दी है, तो मूँझ पड़े हैं। बच्चे भी कहते हैं, बाबा किसको याद करें।

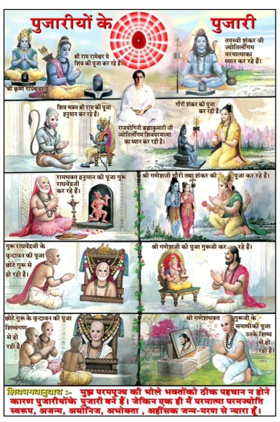

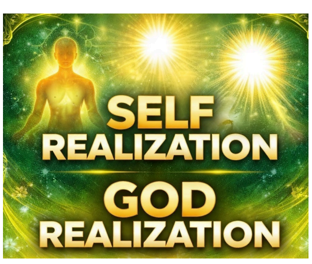

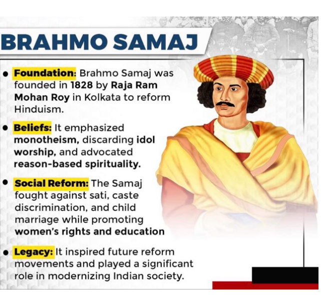

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

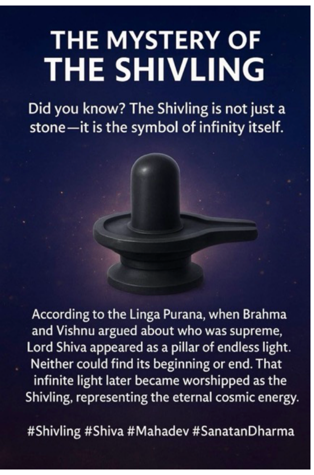

11-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हमने तो सुना था वह बड़ा लिंग है, उनको याद किया जाता है। अब बिन्दी को कैसे याद करें? अरे तुम आत्मा भी बिन्दी हो, बाप भी बिन्दी है। आत्मा को बुलाते हैं, वह जरूर यहाँ ही आकर बैठेंगे। भक्ति मार्ग में जो साक्षात्कार आदि होता है, यह है सब भक्ति। भक्ति भी एक की नहीं करते, बहुतों को भगवान बना दिया है। भगत जो भक्ति करते रहते हैं, उनको भगवान कैसे कहेंगे। अगर परमात्मा सर्वव्यापी कहते हैं तो फिर भक्ति किसकी करते हैं। सो भी भिन्न प्रकार की भक्ति करते हैं।

Here is the Fault

Simple Logic

m.m.m....imp.

Point of the Day

बाप समझाते हैं - बच्चे, ऐसे मत समझो कि हमको अनेक वर्ष जीना है। अभी समय बहुत नजदीक होता जाता है। निश्चय रखना है, बाबा को ब्रह्मा द्वारा स्थापना करानी है। बाप खुद कहते हैं - मैं इस द्वारा तुमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। गाते भी हैं - ब्रह्मा द्वारा स्थापना। यह

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

नहीं जानते कि नई दुनिया को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् विष्णु के दो रूप राज्य करते थे। किसको पता नहीं है कि विष्णु कौन है। तुम जानते हो कि यह ब्रह्मा-सरस्वती ही फिर विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण बन पालना करते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णुपुरी अर्थात् स्वर्ग की फिर पालना करेंगे। तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए - "बाप ज्ञान का सागर है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। वह इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। वही पतित-पावन है," जो बाप का धन्धा है, वही तुम्हारा है। तुम भी पतित से पावन बनाते हो। दुनिया में एक बाप के 3-4 बच्चे होंगे, कोई बच्चा बहुत ऊंचा चढ़ा हुआ होगा, कोई बिल्कुल नीचे होगा। यहाँ तुमको बाप एक ही धन्धा सिखाते हैं कि तुम पतितों को पावन बनाओ। सबको यह लक्ष्य दो कि शिवबाबा कहते हैं - मुझे याद करो। गीता में श्रीकृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। तुमको समझाना है - भगवान तो निराकार, पुनर्जन्म रहित है। बस यही भूल है। अभी तुम बच्चे श्रीकृष्णपुरी के मालिक बन रहे हो। कोई राजधानी में आते हैं,

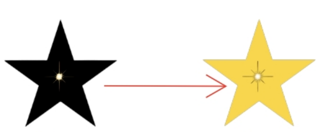

11-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कोई प्रजा में। श्रीकृष्णपुरी कहा जाता है क्योंकि श्रीकृष्ण सभी को बहुत ही प्यारा है। बच्चे प्यारे लगते हैं ना। बच्चों का भी माँ-बाप से प्यार हो जाता है। प्यार सारा बिखर जाता है। अब बाप समझाते हैं - तुम अपने को शरीर मत समझो। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा निश्चय करो। आत्म-अभिमानी बनो। बाप भी निराकार है। यहाँ भी शरीर लेना पड़ता है - समझाने के लिए। बिगर शरीर तो समझा नहीं सकेंगे। तुमको तो अपना शरीर है, बाबा फिर लोन लेते हैं। बाकी इसमें प्रेरणा आदि की बात ही नहीं। बाप खुद कहते हैं - मैं यह शरीर धारण कर बच्चों को पढ़ाता हूँ क्योंकि तुम्हारी आत्मा जो अभी तमोप्रधान बन गई है, उनको सतोप्रधान बनाना है। गाते भी हैं, पतित-पावन आओ, परन्तु अर्थ नहीं समझते। अभी तुम समझते हो - बाप कैसे आकर पावन बनाते हैं। यह भी तुम जानते हो। सतयुग में सिर्फ हमारा ही छोटा झाड़ होगा, तुम स्वर्ग में जायेंगे। बाकी जो इतने खण्ड हैं उनका नाम-निशान नहीं होगा। भारत खण्ड ही स्वर्ग होगा। परमपिता परमात्मा ही

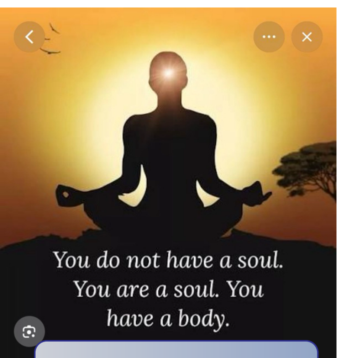

Mind very well...

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥

मेरे परमभावको[2] न जाननेवाले मूढ़लोग मनुष्यका

१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप सत्तामात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'उदासीनके सदृश' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिये।

१२० * श्रीमद्भगवद्गीता * Adhyay-9 Shloka-11

शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं॥ ११॥

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्॥

बुद्धिहीन पुरुष मेरे अनुत्तम अविनाशी परम भावको न जानते हुए मन-इन्द्रियोंसे परे मुझ सच्चिदानन्दघन परमात्माको मनुष्यकी भाँति जन्मकर व्यक्तिभावको प्राप्त हुआ मानते हैं॥ २४॥

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥

अपनी योगमायासे छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष नहीं होता, इसलिये यह अज्ञानी जनसमुदाय मुझ जन्मरहित अविनाशी परमेश्वरको नहीं जानता अर्थात् मुझको जन्मने-मरनेवाला समझता है॥ २५॥ अध्याय:7

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

Imp. हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥ Adhyay-4

How lucky and Great we are...!

इसको साधारण बात नही समझो

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है,
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"
- निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे...
कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना,
जब की स्वयं भगवान(पारस मणी) हमें मिल गए हैं और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू देकर चल रहे हैं...?

only

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

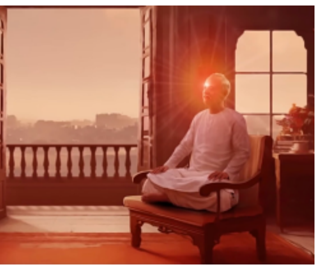

आकर हेविन की स्थापना करते हैं। अभी हेल है। प्राचीन भारत खण्ड ही है जहाँ देवताओं का राज्य था, अब नहीं है। उन्हों के यहाँ मन्दिर हैं, चित्र हैं। तो भारत की ही बात हुई। यह कोई भी भारतवासी की बुद्धि में नहीं आता कि भारत स्वर्ग था, यह लक्ष्मी-नारायण मालिक थे और कोई खण्ड नहीं था। अब तो अनेक धर्म आ गये हैं। भारतवासी धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट बन गये हैं। श्रीकृष्ण को श्याम-सुन्दर कह देते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। बरोबर यह सांवरा था ना। कहते हैं श्रीकृष्ण को सर्प ने डसा तो सांवरा हो गया। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था, कैसे काला हो गया। अभी तुम यह बातें समझते हो। श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी अभी पढ़ रहे हैं। माँ-बाप से उत्तम श्रीकृष्ण गाया हुआ है। माँ-बाप का कोई नाम नहीं है। नहीं तो जिस माँ-बाप से ऐसा बच्चा पैदा हुआ वह माँ-बाप भी प्यारे होने चाहिए। परन्तु नहीं, महिमा सारी राधे-कृष्ण की है। माँ-बाप की कुछ है नहीं। तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। अन्धियारी रात में ठोकरें खाते रहते हैं।

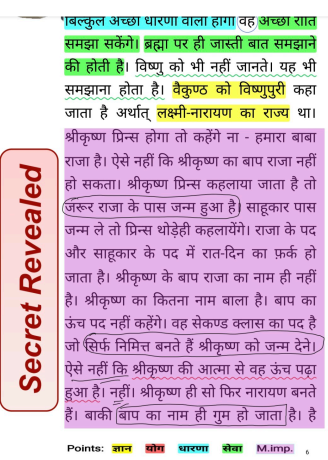

बिल्कुल अच्छा धारणा वाला होगा वह अच्छा रीति समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना - हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

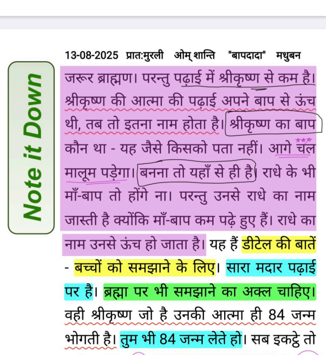

13-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था - यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें - बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं वहाँ

zoom & Read

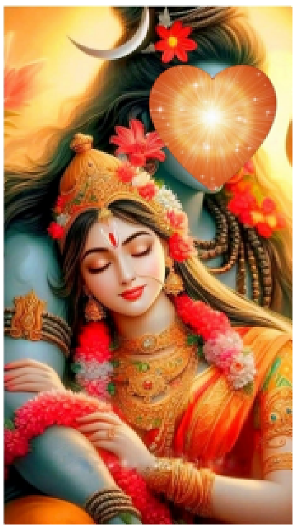

याद करो अपना वायदा...

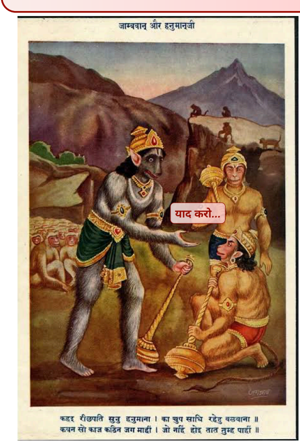

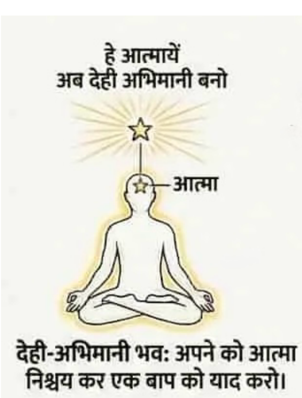

अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है - घर में रहो, यह सर्विस भी करते रहो। कोई को भी समझाओ तुम आधाकल्प के आशिक हो, एक माशूक के। भक्ति मार्ग में सभी उनको याद करते हैं तो आशिक ठहरे ना। परन्तु माशूक को पूरा जानते नहीं हैं। याद बहुत प्यार से करते हैं, हे माशूक तुम जब आयेंगे तो हम सिर्फ आपको ही याद करेंगे और सबसे बुद्धियोग तोड़ आपके साथ जोड़ेंगे। ऐसे तो गाते थे ना, परन्तु बाप से हमको क्या वर्सा मिलता है, यह किसको भी पता नहीं है। अब बाप समझाते हैं - तुम देही-अभिमानी बनो। बाप को याद करना तुम बच्चों का पहला फ़र्ज है। बच्चा हमेशा बाप को, बच्ची माँ को याद करती है। हमजिन्स हैं ना। बच्चा समझता है हम बाप का वारिस बनेंगे। बच्ची थोड़ेही कहेगी, वह तो समझती है हमको पियरघर से ससुरघर जाना है। अब तुम्हारा निराकार और साकार पियरघर है।

बुलाते भी हैं, "हे परमपिता परमात्मा रहम करो। दु:ख हरो सुख दो, हमें लिबरेट करो, हमारा गाइड बनो।" परन्तु उसका अर्थ बड़े-बड़े विद्वान आचार्य भी नहीं जानते हैं। बाप तो सर्व का लिबरेटर है, वही सबका कल्याणकारी है। बाकी वह अपना ही कल्याण नहीं कर सकते तो औरों का क्या करेंगे। यहाँ बाप कहते हैं - मैं गुप्त आता हूँ, खुदा-दोस्त की कहानी सुनी है ना। अब यह पुल है कलियुग और सतयुग के बीच का, उस पार जाना है। अब खुदा तो बाप है, दोस्त भी है। माता, पिता, शिक्षक का पार्ट भी बजाते हैं। यहाँ तुमको साक्षात्कार होता है तो जादू-जादू कह देते हैं। साक्षात्कार तो नौधा भक्ति वालों को भी होते हैं, बहुत तीखे भक्त होते हैं। "दर्शन दो नहीं तो हम गला काटते हैं," तब साक्षात्कार होता है, उनको नौधा भक्ति कहा जाता है। यहाँ नौधा भक्ति की बात नहीं। घर में बैठे-बैठे भी बहुतों को साक्षात्कार होते रहते हैं। दिव्य दृष्टि की चाबी मेरे पास है। अर्जुन को भी मैंने दिव्य दृष्टि दी ना। यह विनाश देखो, अपना राज्य देखो। अब मामेकम् याद करो तो यह बनेंगे। अभी तुम

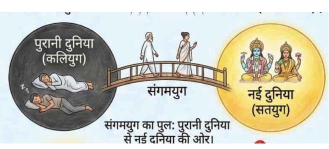

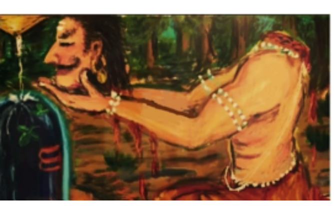

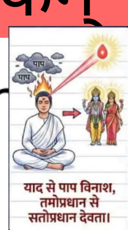

समझते हो - विष्णु कौन है? मन्दिर बनाने वाले खुद नहीं जानते। विष्णु द्वारा पालना, 4 भुजा का अर्थ ही है - 2 भुजा मेल की, 2 फीमेल की। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं। परन्तु कुछ भी समझते नहीं हैं। किसका भी ज्ञान नहीं है। न शिवबाबा का, न विष्णु का। पहले-पहले बाबा का आकर्षण था, बहुत आते थे। शुरूआत में सारा आंगन भर जाता था। जज, मजिस्ट्रेट सब आते थे। फिर विकार का झगड़ा शुरू हुआ, कहने लगे बच्चे नहीं पैदा होंगे तो सृष्टि कैसे चलेगी। यह तो सृष्टि बढ़ने का कायदा है। गीता की बात ही भूल गये कि भगवानुवाच - काम महाशत्रु है, उस पर जीत पानी है। कहने लगे स्त्री-पुरुष दोनों इकट्ठे आयें तो उनको ज्ञान दो। अकेले को नहीं दो। अब दोनों भी आयें तो देवें ना। देखो दोनों को इकट्ठा भी देते हैं तो भी कोई ज्ञान लेते हैं, कोई नहीं लेते हैं। तकदीर में नहीं होगा तो क्या कर सकते हैं। एक हँस, एक बगुला बन पड़ते हैं। यहाँ तुम ब्राह्मण, देवताओं से भी उत्तम हो। जानते हो - हम ईश्वरीय सन्तान हैं, शिवबाबा के बच्चे हैं। वहाँ स्वर्ग में तुमको यह ज्ञान

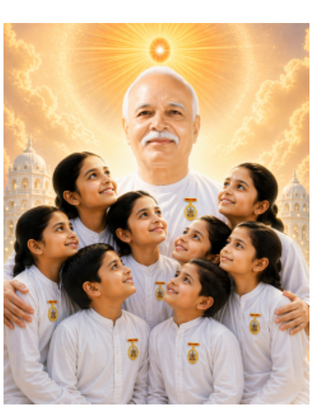

नहीं रहेगा, न जब निराकारी दुनिया मुक्तिधाम में होंगे तब यह ज्ञान होगा। यह ज्ञान शरीर के साथ ही खत्म हो जाता है। अभी तुमको ज्ञान है, एक बाबा पढ़ा रहे हैं। अब यह खेल पूरा होता है, सब एक्टर्स हाजिर हैं। बाबा भी आया है। रही हुई आत्मायें भी आती रहती हैं। जब सब आ जायेंगे तब विनाश होगा फिर सबको बाप साथ ले जायेगा। सबको जाना है, इस पतित दुनिया का विनाश होना है। अच्छा!

Point to be Noted

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

11-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) पतित से पावन बनाने का धन्धा जो बाप का है, वही धन्धा करना है। सबको लक्ष्य देना है कि बाप को याद करो और पावन बनो।

2) "यह ब्राह्मण जीवन देवताओं से भी उत्तम जीवन है," इस नशे में रहना है। बुद्धि का योग और सबसे तोड़ एक माशूक को याद करना है।

Outcome/Output/Result

11-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Method/Process/Instrument

वरदान:- त्याग और स्नेह की शक्ति द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले स्नेही सहयोगी भव

Finale Achievement

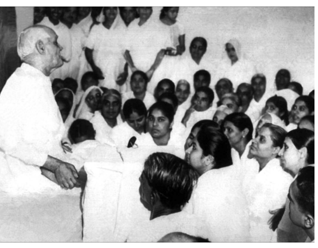

जैसे शुरू में नॉलेज की शक्ति कम थी लेकिन त्याग और स्नेह के आधार पर सफलता मिली। बुद्धि में दिन रात बाबा और यज्ञ तरफ लगन रही, जिगर से निकलता था बाबा और यज्ञ। इसी स्नेह ने सभी को सहयोग में लाया। इसी शक्ति से केन्द्र बनें। साकार स्नेह से ही मन्मनाभव बनें, साकार स्नेह ने ही सहयोगी बनाया। अभी भी त्याग और स्नेह की शक्ति से घेराव डालो तो सफलता मिल जायेगी।

If Then

स्लोगन: फरिश्ता बनना है तो व्यर्थ बोल वा डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त बनो।

Refer page-16 for अव्यक्त महावाक्य on वाणी की शक्ति

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

कोई भी बात हो जाए चाहे प्रकृति की, चाहे व्यक्ति की, दोनों अचल स्थिति के आसन को ज़रा भी हिला न सकें। इतने पक्के हो ना! पुछो अपने आप से...

जैसे देखो शरीर आसन पर नहीं टिक सकता तो हलचल करेगा ना!

ऐसे मन हलचल तो नहीं करता?

सदा अचल अडोल, ज़रा भी हलचल नहीं हो।

Simple Math..

अगर कभी हलचल और कभी अचल है तो सिंहासन भी कभी मिलेगा, कभी नहीं मिलेगा।

एक - **संकल्प शक्ति** जो सबसे श्रेष्ठ शक्ति है उसको यथार्थ रीति स्वयं प्रति वा सेवा प्रति समय प्रमाण कार्य में लगाने की यथार्थ रीति नहीं है। दूसरा **कारण - वाणी की शक्ति** को यथार्थ रीति, समर्थ रीति से कार्य में लगाने की कमी। इन दोनों में कमी का कारण है - यूज़ के बजाय लूज़। शब्दों में अंतर थोड़ा है लेकिन परिणाम में बहुत अंतर पड़ जाता है। बापदादा ने सिर्फ 3-4 दिन की रिजल्ट देखी, टोटल रिजल्ट नहीं देखी। हर एक की 3-4 दिन की रिजल्ट में क्या देखा? 50 परसेन्ट अर्थात् आधा-आधा। संकल्प और बोल में दोनों शक्तियों के जमा का खाता, 50 परसेन्ट आत्माओं का 40 परसेन्ट और व्यर्थ वा साधारण का खाता

Subtle Psychology

60 परसेन्ट देखा। तो सोचो जमा कितना हुआ! ज्यादा वजन किसका हुआ? इसमें भी वाचा के कारण मन्सा पर प्रभाव पड़ता है। मन्सा, वाचा को भी अपनी तरफ खींचती है। आज बापदादा वाणी अर्थात् बोल की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं क्योंकि बोल का सम्बन्ध अपने साथ भी है और सर्व के साथ भी है। और देखा क्या? मन्सा द्वारा याद में रहना है - उसके लिए फिर भी बीच-बीच में प्रोग्राम रखते हैं। लेकिन बोल के लिए अलबेलापन ज्यादा है, इसलिए बापदादा इस पर विशेष अंडरलाइन करा रहे हैं। दो वर्ष पहले बापदादा ने विशेष पुरुषार्थ में सेवा में आगे बढ़ने वाले महारथी आत्माओं को और सभी को तीन बातें बोल के लिए कही थी - "कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो।" व्यर्थ बोलने की निशानी है - वह ज्यादा बोलेगा, मजबूरी से समय प्रमाण, संगठन प्रमाण अपने को कंट्रोल करेगा लेकिन अंदर ऐसा महसूस करेगा जैसे कोई ने शान्ति में चुप रहने लिए बांधा है। व्यर्थ बोल बड़े-से-बड़ा नुकसान क्या करता है? एक तो शारीरिक एनर्जी समाप्त होती क्योंकि खर्च होता है और दूसरा - समय व्यर्थ जाता है। व्यर्थ बोलने वाले की आदत क्या होगी? छोटी-सी बात को बहुत लम्बा-चौड़ा करेगा और बात करने का तरीका कथा मुआफिक होगा। जैसे रामायण, महाभारत की कथा... इंट्रेस्ट से सुनाते हैं ना। खुद भी रुचि से बोलेगा, दूसरे की भी रुचि पैदा कर लेगा, लेकिन रिजल्ट क्या होती? रामायण, महाभारत की रिजल्ट क्या है? राम बनवास गया, कौरवों और पाण्डवों की युद्ध हुई, कहानी जैसा दिखाते हैं, सार कुछ भी नहीं लेकिन साज़ बहुत रमणीक होता है। इसको कहते हैं कथा। व्यर्थ बोलने वाले माया के प्रभाव के कारण वह कमजोर आत्मा है, उन्हों को सुनने और सुनाने के साथी बहुत जल्दी बनते हैं। ऐसी आत्मा एकान्तप्रिय हो नहीं सकती इसलिए वह साथी बनाने में बहुत होशियार होगा। बाहर से कभी-कभी ऐसे दिखाई देता है कि इन्हों का संगठन पावरफुल और ज्यादा लगता है। लेकिन एक बात सदा के लिए याद रखो कि माया के जाने का

ALERT

अन्तिम चरण है, इसलिए विदाई लेते-लेते भी अपना तीर लगाती रहती है इसलिए कभी-कभी, कहाँ-कहाँ माया का प्रभाव अपना काम कर लेता है। वह आराम से जाने वाली नहीं है। लास्ट घड़ी तक डॉयरेक्ट नहीं तो इनडायरेक्ट, कड़ुवा रूप नहीं तो बहुत मीठा रूप और नया-नया रूप धारण कर ब्राह्मणों की ट्रायल करती रहती है। फिर भोले-भाले ब्राह्मण क्या कहते? यह तो बापदादा ने सुनाया ही नहीं था कि इस रूप में भी माया आती है! अलबेलेपन के कारण अपने को चेक भी नहीं करते और सोचते कि बापदादा तो कहते हैं कि माया आयेगी..। आधा अक्षर याद रखते हैं कि माया आयेगी लेकिन मायाजीत बनना है - यह भूल जाते हैं।

Remember it...!

Check & Change

और बात - व्यर्थ वा साधारण बोल के भिन्न-भिन्न रूप देखे। एक - सीमा से बाहर अर्थात् लिमिट से परे हंसी-मजाक, दूसरा - टोंटिंग वे, तीसरा - इधर-उधर के समाचार इकट्ठा कर सुनना और सुनाना, चौथा - कुछ सेवा-समाचार और सेवा के साथ सेवाधारियों की कमजोरी का चिंतन - यह मिक्स चटनी और पांचवा - अयुक्तियुक्त बोल, जो ब्राह्मणों की डिक्शनरी में है ही नहीं। यह पांच रूपरेखायें देखी। इन पांचों को ही बापदादा व्यर्थ बोल में गिनती करते हैं। ऐसा नहीं समझो - हंसी-मज़ाक अच्छी चीज़ है। हंसी-मज़ाक अच्छा वह है जिसमें रूहानियत हो और जिससे हंसी-मजाक करते हो उस आत्मा को फायदा हुआ, टाइम पास हुआ या टाइम वेस्ट गया? रमणीकता का गुण अच्छा माना जाता है लेकिन व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल के प्रमाण रमणीकता अच्छी लगती है। अगर इन सब बातों में से एक बात भी ठीक नहीं तो रमणीकता भी व्यर्थ की लाइन में गिनी जायेगी और सर्टीफिकेट क्या मिलेगा कि हंसाते बहुत अच्छा है लेकिन बोलते बहुत है। तो मिक्स चटनी हो गई ना। तो समय की सीमा रखो। इसको

कहा जाता है मर्यादा पुरुषोत्तम। कहते हैं - मेरा स्वभाव ही ऐसा है। यह कौन सा स्वभाव है? बापदादा वाला स्वभाव है? तो इसको भी मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे, साधारण पुरुष कहेंगे। बोल सदैव ऐसे हों जो सुनने वाले चात्रक हों कि यह कुछ बोले और हम सुनें - इसको कहा जाता है अनमोल महावाक्य। महावाक्य ज्यादा नहीं होते। जब चाहे तब बोलता रहे - इसको महावाक्य नहीं कहेंगे। तो सतगुरू के बच्चे - मास्टर सतगुरू के महावाक्य होते हैं वाक्य नहीं। व्यर्थ बोलने वाला अपनी बुद्धि में व्यर्थ बातें, व्यर्थ समाचार, चारों ओर का कूड़ा-किचड़ा जरूर इकट्ठा करेगा क्योंकि उनको कथा का रमणीक रूप देना पड़ेगा। जैसे शास्त्रवादियों की बुद्धि है ना इसलिए जिस समय और जिस स्थान पर जो बोल आवश्यक हैं, युक्तियुक्त हैं, स्वयं के और दूसरी आत्माओं के लाभ-लायक हैं, वही बोल बोलो। बोल के ऊपर अटेन्शन कम है, इसलिए इस पर डबल अण्डरलाइन।

Point to Ponder & Inculcate.

Point for Lifetime

Point of the Day

विशेष इस वर्ष बोल के ऊपर अटेन्शन रखो। चेक करो - बोल द्वारा एनर्जी और समय कितना जमा किया और कितना व्यर्थ गया? जब इसको चेक करेंगे तो स्वत: ही अन्तर्मुखता के रस को अनुभव कर सकेंगे। अंतर्मुखता का रस और बोल-चाल का रस - इसमें रात-दिन का अन्तर है। अन्तर्मुखी सदा भ्रकुटी की कुटिया में तपस्वीमूर्त का अनुभव करता है। समझा!

समझना अर्थात् बनना। जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा जरूर, समझेगा जरूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार, तब तो भाग्य मिला है ना। निमित्त बनने का भाग्य - इसका महत्व अभी कभी-कभी साधारण लगता है, लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना -

Ask within...!

Page : 16

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Method/Process/Instrument — Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है, उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा। प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। m.m.m....imp. जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।

Here is the Difference

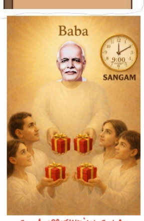

Equal opportunity for All

Advantages

इस वरदान के संदर्भ में....

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए की स्व-अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वाध्याय/Self Study से ही हम ज्ञान की गहराई में जा सकेंगे और आत्मा में जो विकार गहराई में घर कर चुके हैं उनको Analyze कर सकेंगे जिसके चलते उनको निकाल भी सकेंगे।

Team HLM ये विनम्रता से भार पूर्वक अरज करती है कि आप मुरली को पढ़कर सेल्फ स्टडी अवश्य कीजिये। (यह समय बीत गया तो फिर कभी वापिस नहीं आएगा क्योंकि यह चक्र कल्प कल्पान्तर हूबहू रिपीट होता है)

तभी आप मुरली को गहराई से समझ पाएंगे और मुरली को समझना अर्थात मीठे बाबा को समझना क्योंकि मुरली है शिवबाबा का मन...

बाबा कहते हैं कि तुम जितना मुझको जानते जाओगे उतना संपन्न बनते जाओगे और सब कुछ जान जाओगे।

अपनी घोट तो नशा चढ़े...

बाप दादा के अनमोल मधुर महावाक्य मनन शक्ति पर

Click

हैं - मेरे को याद करने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। अच्छा।

01/04/2026

Note it down